अंदरूनी हालात का विश्लेषण

नीस पर हुआ हमला उन लोगों की आंखें खोलने के लिए पर्याप्त है, जो अब तक यह सोचते आए हैं कि दहशतगर्द कुछ भटके हुए लोग हैं और उन्हें समझा-बुझाकर 'मुख्यधारा' में लाया जा सकता है। अब समय आ गया है, जब हम सच का सामना करें और कठोर वास्तविकताओं से जूझने के लिए खुद को तैयार करें। मैं घटना के विवरण को दोहराना नहीं चाहता। पिछले 48 घंटों में इसके बारे में बहुत कुछ कहा-सुना जा चुका है। ट्यूनीशियाई मूल का मोहम्मद लावेइज बूहलल कौन था? आप उसकी पृष्ठभूमि पर ध्यान दीजिए। वह फ्रेंच नागरिक था। वह फ्रांस की खुली संस्कृति में सांस लेने वाला शख्स था। पर उसके मन के अंधेरे बंद कोने में औपनिवेशिक ट्यूनीशिया का गर्द-ओ-गुबार फ्रेंच सुख-सविधाओं को भोगने के बावजूद कभी छटा नहीं। उसकी मानसिकता को फ्रांस की खुली आबो-हवा साफ नहीं कर सकी। उसका दुस्साहस साबित करता है कि दर्प से दमकती सभ्यताओं की आस्तीनों में भुजंग पल रहे हैं। आप पिछले एक साल के भीतर पश्चिमी देशों में हुए हमलों पर नजर डालकर देखिए। इनमें से ज्यादातर को उन लोगों ने अंजाम दिया है, जो नई तहजीब में जन्मे और पनपे थे। यह एक नई तरह की धार्मिक कट्टरता है, जिसने क्षेत्रीय लड़ाइयों को बौना करना शुरू कर दिया है। ऑरलैंडो के मतीन, नीस के बूहलल और कश्मीर के बुरहान वानी में समानता के तमाम तंतु मौजूद हैं। ये सारे लोग सोवियत संघ के पतन के बाद पैदा हुए। इस ऐतिहासिक घटना ने साबित कर दिया था कि अब समूची दुनिया से साम्यवाद की रोमानियत खत्म हो गई है और पूंजीवाद ही सच्चाई है। उस समय के भाषणों और अखबारों में छपे अग्रलेखों को पढ़कर देखिए। एक बड़ा तबका यह साबित करने में जुटा था कि सबको बराबरी का दर्जा देना असंभव है, क्योंकि कुदरत ने इंसानों को अलग-अलग तरीके से बनाया है। अमरीका और रूस के अंदरूनी हालात का विश्लेषण करते हुए इस तरह के विद्वान बताते थे कि सबको साथ लेकर चलने के चक्कर में सोवियत नेताओं ने दो पीढ़ियों का कबाड़ा कर दिया। इसके उलट पूंजीवादी पश्चिमी देशों ने सारी दुनिया की प्रतिभाओं के लिए दरवाजे खोले और एक ऐसे समाज की संरचना की, जहां सभी को अपनी काबिलीयत जताने और दिखाने के समान अवसर हासिल हैं। कोई हरगोविंद खुराना अगर भारत के कस्बाई शहरों में जैव-रसायन विज्ञान पढ़ाता रह जाता, तो उसे 'नोबेल पुरस्कार' कैसे मिलता? अमरीका ने उनकी प्रतिभा के अनुरूप साधन मुहैया कराए और कमाल हो गया! ऐसा कहने और लिखने वाले भूल गए कि चमत्कारों की अपनी उम्र होती है और हर सच शाश्वत साबित हो, यह जरूरी नहीं। जाने-अनजाने पश्चिमी देशों में तरह-तरह के असंतोष पनपते चले गए, पर इन मुल्कों को हांकने वाले नेता वित्तीय विकास दर और 'कॉरपोरेटी साम्राज्यवाद' पर इठलाते रहे। वे उस शाश्वत सत्य की अनदेखी कर गए कि जहां धूप होती है, वहां परछाई अवश्य होती है और परछाइयों को कभी अपने अस्तित्व से लंबा होने की इजाजत नहीं दी जानी चाहिए। आप अगर 1950-60 के दशक में लौटकर देखें, तो पाएंगे कि संसार में अलगाववाद तब भी था, आतंकवादी तब भी थे, पर वे अलग-अलग मकसद से, अलग-अलग इलाकों में लड़ाइयां लड़ रहे थे। यासिर अराफात फलस्तीन के लिए जूझ रहे थे। भारत और पाकिस्तान जैसे विकासशील मुल्कों में एक तबके के बीच उन्हें नायक का दर्जा हासिल था। लोग अपने बच्चों के नाम उनके नाम पर रखकर फख्र महसूस करते थे, मगर उनकी फौज में शामिल होने के लिए बाहरी मुल्कों के लोग उतावले नहीं हुए जाते थे। अर्जेंटीना के चे ग्वेरा हमारी पीढ़ी के हीरो हुआ करते थे। अमरीका ने उनको जिस तरह मारा, उससे समूची दुनिया में गम और गुस्से की लहर फैल गई थी। शोक सभाएं आयोजित की गई थीं, छोटे-मोटे प्रदर्शन हुए थे, पर नौजवान अपने घर-बार छोड़कर अमरीका और अमरीकियों से जूझने के लिए कूच नहीं कर गए थे। पूंजीवादी साम्राज्यवाद ने अगर समूची दुनिया को 'कोक' और 'मैकडोनल्ड्स' की सौगातें दीं, तो आतंकवाद को भी अंतरराष्ट्रीय होने के अवसर प्रदान किए। ओसामा बिन लादेन भी इसी व्यवस्था की देन था और इस नाते वह इसके गुण-दोषों को पहचानता था। उसने अपने हक में इसका इस्तेमाल किया। अल-बगदादी ने इसमें नए-नए कुत्सित आयाम जोड़े हैं। उसका तंत्र कितना जबर्दस्त है, इसका उदाहरण ढाका का संहार है। पुलिस जब होली आर्टिसन बेकरी कैफे में कब्जा जमाए हत्यारों से जूझ रही थी, तब आईएस का प्रचार-तंत्र कह रहा था कि हमारे लड़ाकों ने 20 लोग हलाक कर दिए। बांग्लादेश की सरकार ने इसे यह कहकर झुठलाने की कोशिश की थी कि अभी तो लड़ाई चल रही है।

एचटीसी ने नया अग्रणी स्मार्टफोन एचटीसी यू11 पेश किया

आप जिसे प्यार करते हैं, उसका हाथ बड़े प्यार से भींच लेते हैं। एक शिशु अपनी मां की अंगुलियों को सहजता से दबोच लेता है। एक बच्चा रात में सुरक्षित महसूस करने के लिए अपने टेडी बियर को दबोचे रखता है। जुड़ाव का एहसास करने के लिए स्पर्श की अनुभूति या आलिंगन की गर्मी जैसी कोई दूसरी चीज़ नहीं है। और हमारे जीवन में हमारे स्मार्टफोन जितना निजी कोई दूसरा उपकरण नहीं है।

स्पर्श की ताकत और आपकी सूझबूझ से प्रेरित एचटीसी ने क्रांतिकारी नए स्क्वीज़ इंटरैक्शन के साथ विश्व का पहला स्मार्टफोन एचटीसी यू11 आज पेश किया। आपकी आंतरिक तेज़ी, जुनून, रचनात्मकता और निजता को परिलक्षित करने वाली डिजाइन, सामग्री और अनुभवों से तैयार एचटीसी यू11 एक स्मार्टफोन में अब तक की सबसे उन्नत खूबियों की पेशकश करता है जिसमें निम्नलिखित शामिल हैं: एचटीसी एज सेंस, आपके फोन के साथ स्पर्श संवाद में नया आयाम।तरल सतह, एक शानदार, अनूठी डिज़ाइन जो आपका प्रतिबिंब है। एचटीसी यू सॉनिक, पर्सनल ऑडियो के लिए हमारा अब तक का सबसे उन्नत हेडसेट जिसमें अब एक्टिव नॉइस कैंसिलेशन शामिल है। शानदार कैमरे, एक स्मार्टफोन कैमरा1 को अब तक दी गई उच्चतम स्वतंत्र रेटिंग के साथ। एचटीसी सेंस कैंपेनियन, गूगल असिस्टेंट और एमेजॉन एलेक्सा, एक तेज़, अधिक उपयोगी स्मार्टफोन2 के लिए। कुल मिलाकर, एक स्मार्टफोन से आप जो अपेक्षा करते हैं, एचटीसी यू11 उसका नया मानक तय करता है। (19-8)

आप तंदुरुस्ती चाहते हैं, तो सच्चाई से परहेज करिए

हुआ यह कि एक दफा एक वकील ने भरी अदालत में सच बोल दिया। बेचारा मुकदमा तो हारा ही, कानून-व्यवस्था भी सनाका खा गई। बाकी मुवक्किल भी उसे शक की निगाह से देखने लगे। वकील का काला कोट सफेद हो गया। कहने का मतलब यह कि भाई साहब, आप तंदुरुस्ती चाहते हैं, तो सच्चाई से परहेज करिए। सयाने लोग कह गए हैं कि कुछ सच रोशनी में दिखाई नहीं देते। मगर कुछ झूठ बहुत चमकीले होते हैं। अंधेरे में ही दिखाई देते हैं। यह तय है कि अगर आपने झूठ बोलकर कैजुअल लीव नहीं ली, तो वह स्वीकृत नहीं होगी। सच तो आंखों में किरकिरी की तरह चुभता है। कई मरीज ऐसे हैं, जिन्होंने डॉक्टरों से झूठ बोला और बच गए। सच तो हमेशा गाली और जूते खिलवाता है। सच बोलने की पीनक में एक दफे एक काने आदमी को काना और एक गधे को गधा कह दिया, काने ने मुझे थप्पड़ मारा और गधे ने दुलत्ती मारी। कलात्मक झूठ को ही साहित्य कहते हैं। झूठ बोलना भी एक कला है। सरकार अगर लगातार झूठ न बोले, तो वह फिर चल ही नहीं सकती। झूठ बोलकर पति-पत्नी वर्षों साथ निभाते हैं। जिसने, जिस दिन सच बोला, समझो कि उसी दिन तलाक तय है। भाई साहब, झूठ को अब कौआ भी नहीं काटता। सत्य की खोज करना ऋषि-मुनियों का काम था।

कांग्रेस का चुनावी अभियान

दिल्ली की पूर्व मुख्यमंत्री शीला दीक्षित को उत्तर प्रदेश में मुख्यमंत्री पद का उम्मीदवार घोषित कर कांग्रेस ने इस राज्य में अपने चुनावी अभियान की शुरुआत कर दी। कपूरथला में जन्मीं और दिल्ली में पली-बढ़ी शीला दीक्षित का उत्तर प्रदेश से भी नाता रहा है। वह इंदिरा गांधी सरकार में मंत्री रहे उमाशंकर दीक्षित की बहू हैं। वह कभी चुनाव नहीं लड़े और चार बार राज्यसभा के ही सदस्य रहे। उमाशंकर दीक्षित के परिवार से संबंध होने के कारण शीला दीक्षित खुद को उत्तर प्रदेश का मानती हैं। उन्होंने शुरू में राजनीति में आने में संकोच किया, लेकिन इंदिरा गांधी के कहने पर उन्होंने राजनीति में कदम रखा। वह कन्नौज से लोकसभा सदस्य भी चुनी गईं और तीन साल तक केंद्र सरकार में मंत्री रहीं। धीरे-धीरे उत्तर प्रदेश में उनकी राजनीतिक सक्रियता कम होती गई और दिल्ली की राजनीति में उनका प्रभाव बढ़ने लगा। उनके ही नेतृत्व में कांग्रेस यहां भाजपा को सत्ता से बाहर करने में सफल रही। वह तीन बार दिल्ली की मुख्यमंत्री रहीं और इस दौरान अपने नेतृत्व और विकास संबंधी एजेंडे से उन्होंने जहां कुशल प्रशासक की अपनी छवि बनाई वहीं दिल्ली को एक विश्वस्तरीय महानगर के रूप में उभारा। केजरीवाल से चुनाव हारना उनके लिए एक बड़ा झटका रहा। कुछ लोगों के लिए उत्तर प्रदेश में शीला दीक्षित को मुख्यमंत्री के उम्मीदवार के रूप में प्रस्तुत करने का कांग्रेस का फैसला चौंकाने वाला रहा, क्योंकि दिल्ली की मुख्यमंत्री के रूप में लंबा कार्यकाल बिताने के साथ ही उत्तर प्रदेश से उनका नाता टूट सा गया था। दिल्ली की सत्ता गंवाने के बाद शीला दीक्षित केरल की राज्यपाल बनीं, लेकिन अपने पर लगे भ्रष्टाचार के आरोपों के कारण वह कुछ ही समय तक इस पद पर रह सकीं और इसके बाद वह राजनीतिक रूप से हाशिये पर जाती दिखीं। शीला दीक्षित के चयन से लोग इसलिए भी चौंके हैं, क्योंकि उनकी उम्र 78 साल हो चुकी है और राहुल गांधी युवाओं को आगे बढ़ाने पर जोर देते रहे हैं। बुजुर्ग शीला दीक्षित को उत्तर प्रदेश में अपना चेहरा बना कर कांग्रेस ने यही स्पष्ट किया कि उसके पास युवाओं के लिए कोई संदेश नहीं है। आखिर राहुल अब कैसे कह सकेंगे कि वह यह चाहते हैं कि आम युवा कांग्रेस के जरिये राजनीति में आगे आएं? शीला दीक्षित के चयन के पीछे एक कारण उनका ब्राह्मण होना बताया जा रहा है। चुनावी रणनीतिकार प्रशांत किशोर का जोर किसी ब्राह्मण चेहरे पर ही था। माना जा रहा है कि पहले प्रशांत किशोर ने प्रियंका गांधी को मुख्यमंत्री का उम्मीदवार बनाने का सुझाव दिया था, लेकिन गांधी परिवार ने इस सुझाव पर अमल का सही वक्त नहीं माना। प्रियंका के बारे में कांग्रेस की ओर से इतना भर कहा गया है कि वह उत्तर प्रदेश में सघन चुनाव प्रचार करेंगी। इसका यही अर्थ है कि अगर कांग्रेस ने बेहतर प्रदर्शन किया तो श्रेय उन्हें मिलेगा और अगर नहीं किया तो फिर ठीकरा शीला दीक्षित एवं अन्य दूसरे नेताओं पर फूटेगा। जो भी हो, कांग्रेस उसी पुराने दौर में लौटती दिख रही है जब उत्तर भारत में वह सवर्ण चेहरों को आगे कर राजनीति किया करती थी।

ऊषा ने अपने पंखों की प्रमुख ई-सिरीज रेंज को सुदृढ़ किया

ऊषा इंटरनेशनल, भारत की एक प्रमुख कंज्यूमर ड्यूरेबल्स कंपनी, ने दो नये मॉडलों ईएक्स7 और ईएक्स9 को लॉन्च किया है। इनकी पेशकश इसके प्रमुख ऑटोमोटिव प्रेरित ई-सिरीज फैन रेंज में की गई है। दोनों ही मॉडल्स में 'ऑटोमोटिव पेंट' फिनिश, हाई टॉर्क मोटर और एयरोडायनैमिक ब्लेड्स की खूबियां हैं। ये संचालन के दौरान कम से कम शोर उत्पन्न करती हैं और ज्यादा हवा देती हैं। इन पंखों की पेशकश 240 सीएमएम (घन मीटर प्रति मिनट) की एयर डिलीवरी के साथ की गई है। जबकि अधिकतर पंखों में 210-220 सीएमएम की एयर डिलीवरी पाई जाती है।ऊषा ई-सिरीज ऑटोमोबाइल के शौकीनों को प्रेरित करने के लिये तैयार है। यह अत्याधुनिक तकनीक और खूबसूरती का परफेक्ट संयोजन है, जोकि उच्च परफॉर्मेंस प्रदान करता है। ई-सिरीज रेंज में श्री लेयर्ड 'ऑटोमोटिव इंस्पायर्ड' मेटैलिक कलर्स एवं फिनिश की खूबी है। नये लॉन्च पर श्री रोहित माथुर, प्रेसिडेंट-फैन्स, ऊषा इंटरनेशनल ने कहा, ''ऊषा ई-सिरीज को लॉन्च करने की हमारी रणनीति ऑटोमोटिव उद्योग में डिजाइन एवं रंग को लेकर उभरते उपभोक्ता रूझानों पर आधारित है। ऊषा इस वर्ष कंज्यूमर सेगमेंट में पंखों में 20 से अधिक नये मॉडल्स लॉन्च करने के लिये तैयार है।''ऊषा द्वारा हाइ-ग्रेड स्टील लैमिनेशन का इस्तेमाल किया जाता है, ताकि पंखों के परफॉर्मेंस और ड्युरैबिलिटी को बढ़ाया जा सके। ये पंखे देश भर में उपलब्ध होंगे। कीमत अनुरोध करने पर बताई जायेगी। इस संबंध में विस्तृत जानकारी के लिये कृपया लॉग ऑन करें। (8)

संपादक-चुनीलाल एस. भट्ट, मुद्रक एवं प्रकाशक-मयुर सी. भट्ट, प्रकाशन स्थल-201, 202, 208 नंदन कोम्पलेक्ष, मीठाखली, अहमदाबाद-6. मालिक-कल्याणी पब्लिकेशन प्रा.लि. द्वारा महादेव ऑफसेट, बी-4, रवि एस्टेट, रूस्तम मिल कम्पाउंड, दूधेश्वर, अहमदाबाद में छपवाकर प्रकाशित किया। फोन-26568477, 26409779. E : alpaviram1@yahoo.com

मनीपाल यूनिवर्सिटी में इन्टरनेशनल ट्रांसफर प्रोग्राम के लिए प्रवेश शुरू

अहमदाबाद: भारत की अग्रणी प्राइवेट यूनिवर्सिटी में से एक मनीपाल यूनिवर्सिटी द्वारा अपने इन्टरनेशनल ट्रांसफर प्रोग्राम इन्टरनेशनल सेन्टर फॉर अप्लाइड सायन्सीस (आईसीएएस) द्वारा ऑफर किया गया है। यह अनोखा प्रोग्राम इंजीनियरिंग में अध्ययन करते विद्यार्थियों को मनीपाल यूनिवर्सिटी में पढाई कर सकते है। यह प्रोग्राम सम्पन्न होने बाद विद्यार्थी इंजीनियरिंग डिग्री डेस्टीनेशन इन्टरनेशनल यूनि. द्वारा प्राप्त करेंगे और इन्टरनेशनल प्लेसमेन्ट ले सकते है अथवा उनकी इच्छानुसार विदेश में ऊंच्च अध्ययन कर सकते है।

1994 से इन्टरनेशनल सेन्टर फॉर एप्लायड सायन्सिस (आईसीएएस) इन्टरनेशनल ट्रांसफर प्रोग्राम चलाते है जहां विद्यार्थी से भारत में एवं युएसए , युके, आस्ट्रेलिया, जर्मनी, केनेडा, फ्रान्स आदि देशो में अध्ययन का विकल्प रहेगा।प्रख्यात यूनिवर्सिटी जैसे कि कोर्नेल यूनि., यूनिवर्सिटी ऑफ केलिफोर्निया- बकर्ले, इलिनोइस इन्स्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलोजी , लेन्केस्टर यूनि. यूनि. ऑफ लीड्स एवं ऑस्ट्रेलियन नेशनल यूनिवर्सिटी आदि आईसीएएस क्रेडिट्स स्वीकारते हैं और इन्टरनेशनल प्लेसमेन्ट का अवसर 50,000 से 85,000 अमेरिकन डॉलर का सैलेरी पैकेज साथ में देते है।

कोई भी छात्र कि जो 10 प्लस 2 किसी भी बोर्ड से 60 प्रतिशत मार्क्स (व समान ग्रेड) इंग्लिश, फिजिक्स, मेथेमेटिक्स एवं के कैमेस्ट्री-बायोलोजी- कम्प्युटर साइंस-बायोटेक्नोलोजी - इलेक्ट्रोनिक्स सहित पास हो वे योग्यता प्राप्त माने जाएंगे तथा नॉन इंग्लिश मीडियम के छात्र केवल वे टफेल एक्जाम में 90 से उपर का स्कोर प्राप्त किया हो तो योग्यता प्राप्त माने जाएंगे। (19-8)

कौन लेगा जिम्मेदारी?

कुछ ही दिनों में बिहार का टॉपर प्रकरण जनता तथा संचार माध्यमों की दृष्टि से ओझल हो जाएगा। कोर्ट-कचहरी में प्रकरण कई वर्षों तक लटका रहेगा और अगले वर्ष की परीक्षाओं में वही सब कुछ नहीं दोहराया जाएगा, इसकी जिम्मेदारी कोई नहीं लेगा। अब नैतिक जिम्मेदारी जैसे शब्द राज व्यवस्था से अस्वीकृत होकर भुला दिए गए हैं। बिहार की जिस परीक्षा में लाखों युवा बैठे, जिसमें निम्नतम स्तर के कदाचार में उच्चतम स्तर के लगभग सभी अधिकारी सम्मिलित थे, क्या संबद्ध मंत्री का कोई नैतिक उत्तरदायित्व नहीं बनता है। यदि उन्हें जानकारी नहीं थी तो इसे घोर अक्षमता का प्रमाण क्यों नहीं माना जाना चाहिए? यदि ऐसी कोई जालसाजी 1950-65 के बीच हुई होती तो अब तक शायद मुख्यमंत्री स्वत: ही पद छोड़ चुके होते। यहां यह भी याद करना तर्कसंगत होगा कि बिहार में ऐसा सब कुछ शिक्षा में अनेक दशकों से हो रहा था और इसकी जानकारी सभी को थी। 1999 में बिहार के कुछ सरकारी विश्वविद्यालयों द्वारा सारे देश में जिस ढंग से बीएड की डिग्री बेची जाती थी उसका बड़ा खुलासा हुआ था। जो प्राथमिकी दर्ज की गई थी उसमें ऊंचे अधिकारियों, नेताओं तथा कुलपतियों के नाम शामिल थे। उस प्रकरण का हश्र क्या हुआ या होगा? इसका हमारी व्यवस्था में अनुमान लगाना कठिन नहीं है। मगर उस प्रकरण से राज्य सरकार तथा व्यवस्था ने कुछ नहीं सीखा, यह स्पष्ट रूप में देश के सामने इस वर्ष फिर से उजागर हो गया है। बिहार को ऐतिहासिक दृष्टि से विचारों तथा नवाचारों का उद्गम स्रोत माना और जाना जाता रहा है। समसामयिक संदर्भ में देश को आपातकाल के अंधकार से बाहर निकालने में बिहार ने न केवल नेतृत्व प्रदान किया, वरन उसके युवावर्ग ने आगे आकर सारे देश के युवाओं को ही नहीं जनता को भी जागृत कर दिया। इस सब में जो युवा उस समय अग्रणी थे और बाद में सत्ता तक पहुंचे वे उसकी चकाचौंध में इस हद तक खो गए कि केवल अपने और अपनों तक सीमित हो गए। विकास, प्रगति, नैतिकता, गुणवत्ता वाली शिक्षा केवल शब्दमात्र रह गए जो चुनाव घोषणापत्रों तथा विज्ञापनों की शोभा बढ़ाने में जमकर उपयोग में लाए जाते रहे हैं। यहां यह भी याद रखना होगा कि शिक्षा में जो कुछ बिहार के संदर्भ में सम्प्रति सारे देश में चर्चित हो रहा है उसमें बिहार अकेला नहीं है। उत्तर प्रदेश में कुछ वर्ष पहले अध्यापक योग्यता परीक्षा यानी टीईटी में बहुत बड़ा घोटाला उजागर हुआ था। यहां के कक्षा बारह तक के इंटर कालेज बिना किसी भी प्रयोगशाला के विज्ञान के विद्यार्थियों को उच्चतम श्रेणी में बोर्ड की परीक्षा उत्तीर्ण करा देते हैं और इसके लिए देश भर में जाने जाते हैं। नकल कराने में यह देश का सबसे बड़ा प्रदेश बिहार से कतई पीछे नहीं है। मध्य प्रदेश का व्यापमं घोटाला अनेक वर्षों चला और लाखों युवाओं के जीवन में अंधकार भर गया। इधर एक खबर आगरा विश्वविद्यालय में कॉपियों के मूल्यांकन को लेकर छपी है। अंग्रेजी के सम्मानित परीक्षक स्वयं उस भाषा के दो-चार शब्द भी सही नहीं लिख पाए। अर्थशास्त्र के प्राध्यापक आईएमएफ से परिचित नहीं थे। उन्हें वापस भेज दिया गया। ऐसा किया जाना साहसपूर्ण कदम है मगर प्रबुद्ध समाज के लिए यह विचारणीय होना ही चाहिए कि यह या ऐसे ही इनके अन्य सहयोगी और साथी आगे चलकर कुलपति या बोर्ड के अध्यक्ष जैसे पदों पर सुशोभित होंगे तब देश की नई पीढ़ी का क्या होगा? केंद्र सरकार के एक विश्वविद्यालय की महिला कुलपति को फर्जी दस्तावेजों तथा उपाधियों के आधार पर बर्खास्त किया गया है। दुर्भाग्य यह है कि अकादमिक जगत में किसी को भी अब ऐसे प्रकरणों के उजागर होने पर आश्चर्य नहीं होता है। कुछ महीने पहले दिल्ली से यह खबरें भी कई बार आईं कि तीस प्रतिशत फर्जी डिग्रीधारी भी वकालत के पेशे से जुड़े हैं। आशा करनी चाहिए कि ऐसा नहीं है। आशंकाएं तो हर तरफ से आ ही रहीं हैं। पूरे पन्ने के विज्ञापन उन विश्वविद्यालयों की ओर आकर्षित करते हैं जो केवल धनार्जन और उसके एवज में डिग्री बांटने के अलावा और किसी में रुचि नहीं रखते हैं। न ज्ञान में और न कौशल में। इन पर अंकुश लगाने में सरकारें असफल रही हैं। केवल जाग्रत और संगठित समाज ही इन्हें सही रास्ता दिखा सकता है और युवाओं का भविष्य बचा सकता है। पिछले कई दशकों से बिहार के अधिकांश सक्षम तथा संसाधन संपन्न नागरिक अपने बच्चों को बिहार से बाहर भेजकर अपने कर्तव्य की इतिश्री मान लेते रहे हैं। वे अनेक बैठकों, संगोष्ठियों में बिहार की शिक्षा व्यवस्था की आलोचना बार बार दोहराते रहते हैं। अपेक्षा तो यह है कि बिहार का सभ्य समाज जाग्रत हो, उन लाखों बच्चों के भविष्य पर चिंतित हो जो वहीं की व्यवस्था में किसी प्रकार शिक्षा प्राप्त करने का प्रयास करते हैं और नकल माफिया तथा अपने पदनाम को कलंकित करने वाले अधिकारियों, प्राचार्यों तथा अध्यापकों के निर्मम स्वार्थों की बलि चढ़ जाते हैं। बारहवीं की परीक्षा में टॉपर घोषित उस बच्ची की स्थिति कितनों को दहला देगी जब वह कहती है कि मैं तो केवल द्वितीय श्रेणी चाहती थी, मेरे परिवारवालों ने मुझे टॉप करा दिया।

फिआमा मेन कूल बर्स्ट शावर जेल का अनुभव 3 डिग्री कम तापमान

फिआमा द्वारा भीषण गरमी का सामना करने फिआमा कूल बर्स्ट शावर जेल की पेशकश की गयी है, यह नया इनोवेटिव बाथ जेल आपके शरीर के तापमान को 3 डिग्री जितना कम कर देगा। जेल में मेन्थोल है जो स्वास्थ्य के लिए लाभकारी है और ताजगी से भरपूर फ्रेग्नरन्स आपको तरोताजा कर देगी।मेल कूल बर्स्ट में शरीर एवं बालों के लिए ड्युअल क्लिन्जर है जो गरमी से तरबतर शरीर को रिलेक्सींग अनुभव देगा। तो फिआमा मेन कूल बर्स्ट शावर जेल में कूल रहो। (13)

मछलियों की 120 प्रजातियों पर संकट

पिछले दिनों कोलकाता से एक खबर आई कि एक झील में ऐलगेटर गार नाम की शिकारी मछली पाई गई है। इस खबर ने शायद वहां के मछुआरों की खुशियां बढ़ा दी होंगी, मगर हकीकत में यह चिंता की बात है। असल में यह एक ऐसी मछली है, जो अपने तालाब की दूसरी तमाम प्रजाति की मछलियों को खा जाती है। आज देश में मीठे जल में पाई जाने वाली मछलियों की कम से कम 120 प्रजातियां संकट में हैं। उनके संरक्षण की फौरन जरूरत है। मगर विडंबना यह है कि भारत में मछलियों के संरक्षण से जुड़ी कोई नीति अब तक परवान नहीं चढ़ सकी है। यहां तक कि वन्य-जीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 में भी, जिसमें जैव-विविधता के सभी रूपों को संरक्षित किए जाने की बात है, मीठे जल व समुद्री प्रजातियों की मछलियों को नजरअंदाज किया गया है। इस अधिनियम में जमीन के ऊपर की प्रजातियों को ही समेटा गया है। वह तो भला हो जैव-विविधता पर काम करने वाले विशेषज्ञों का, जिनकी सक्रियता के कारण वर्ष 2001 में एक अधिसूचना जारी करके समुद्री मछली शार्क, रे और 15 प्रकार के घोंघों के शिकार पर रोक लगाई गई। मगर आज भी ऐसी सैकड़ों प्रजाति की मछलियां हैं, जिनको अत्यधिक दोहन से बचाने की जरूरत है। देश में मछलियों की अनेक प्रजातियों के विलुप्त होने की वजहों में एक्वेरियम (मछलीघर) के लिए मछलियों का व्यापार तो है ही, नदियों में पसरता प्रदूषण और उन पर बांध जैसे निर्माण-कार्य भी हैं। अब कृष्णा नदी का ही उदाहरण लें। इसकी गिनती देश की बड़ी नदियों में होती है। साल 2014 में हुए एक अध्ययन में पाया गया था कि इसमें 109 प्रजाति की मछलियां थीं, मगर दुर्भाग्यवश अब इनमें से लगभग आधी रह गई हैं।

उत्तर पश्चिम रेलवे
ई-निविदा सूचना

सं. MED-H-17-18-All-GB Dt. : 13.05.2017

मुख्य चिकित्सा अधीक्षक अजमेर भारत के राष्ट्रपति एवं उनकी ओर से निम्नलिखित कार्य हेतु दिनांक **20.06.2017** को 15.00 बजे तक ई-निविदा आमंत्रित की जाती है। **1. कार्य का नाम :** गुलाबबाड़ी के आस-पास का क्षेत्र एवं माल रोड का दक्षिण क्षेत्र (कॉलोनी नंबर-2, गैंग कॉलोनी, एसटीसी रोड, आरयूबी रोड, टीपी प्रेस के पीछे, जीआरपी लाइन, गुलाबबाड़ी) रेलवे कॉलोनी अजमेर और उनके आसपास के सभी क्षेत्रों में साफ सफाई के लिए आउटसोर्सिंग का कार्य मय श्रम, सामग्री, उपकरण, श्रमिकों की वर्दी आदि के साथ एक वर्ष हेतु ठेके पर देना। **बयाना राशि : रु. 1,98,830/- कार्य की अनुमानित लागत : रु. 99,41,282.04 ई-प्रस्ताव का खुलना :** प्रस्ताव दिनांक 20.06.2017 को 15.30 बजे। **website particulars : www.ireps.gov.in**

414-JA/17

रेल सुरक्षा संबंधी शिकायत हेतु हैल्पलाइन नं. 182 पर सम्पर्क करें

मिलिटरी इंजीनियर सर्विसेज

भारत के राष्ट्रपति की ओर से, गेरिसन अभियंता (आई) (वायुसेना), निकट मकरपुरा, बडौदा-14 एवं मूल्य के पात्र सूचीबद्ध ठेकेदारों तथा अन्य विभागों में कार्यरत सूचीबद्ध एवं असूचीबद्ध, पात्रता मानदण्डों को पूरा करनेवाले ठेकेदारों से निविदा जारी करने हेतु चयन करने के लिए आवेदन आमंत्रित करते है ।

क्रम सं.	कार्य का नाम	अनुमानित लागत रू. लाख में	टेन्डर आईडी	फाईल नं.
1.	बड़ोदा एरफोर्स स्टेशन मकरपुरा में OTM/MD ACCN का डे टू डे मेंटेनेंस (द्वितीय कोल)	₹ 42.50	2017_MES_117241_1	8332/E8
2.	बड़ोदा एरफोर्स स्टेशन मकरपुरा में निस्चित बिल्डिंग का वेलकम मेंटेनेंस(द्वितीय कोल)	₹ 46.50	2017_MES_117244_1	8340/E8
3.	बड़ोदा एरफोर्स स्टेशन मकरपुरा में ड्रेनेज का रिपेरिंग और निस्चित B/R रिपेरिंग (द्वितीय कोल)	₹ 43.80	2017_MES_117915_1	8339/E8
4.	बड़ोदा में एरफोर्स स्टेशन दरजिपुरा ओर हरणी केम्प के निस्चित पॉकेट का, हरणी केम्प रोड में डेमेज ड्रेन कलवर्ट का २२३१ SQN रिपेरिंग, P१९ रडार और सभी तीन लोंचर का कनेक्टिंग ओर रडार प्लिन्थ का बांधकाम	₹ 47.00	2017_MES_118837_1	8355/E8
5.	बड़ोदा एरफोर्स स्टेशन में निस्चित रेवन्यू काम और BER आइटम के साथ EM आर्टिकल्स का प्रावधान	₹ 40.00	2017_MES_118886_1	8358/E8
6.	दरजिपुरा में SNCOS MESS के ACCN में सिंगल लीविंग और बिल्डिंग नं P१६६ का विशिष्ट रिपेरिंग	₹ 48.00	2017_MES_118953_2	8335/E8
7.	बड़ोदा एरफोर्स स्टेशन मकरपुरा में ऑफिसर्स मेस में ACCN में रहेने के लिए का विशिष्ट रिपेरिंग	₹ 48.50	2017_MES_119087_1	8363/E8
8.	बड़ोदा एरफोर्स स्टेशन हरणी में ४ रूम धारी CCR का प्रावधान	₹ 47.50	2017_MES_119092_1	8378/E8
9.	दरजिपुरा में जोइनरिस और संकन फ्लोर का विशिष्ट रिपेरिंग (द्वितीय कोल)	₹ 72.00	2017_MES_119122_1	8336/E8
10.	बड़ोदा एरफोर्स स्टेशन हरणीकेम्प और हरणी एरफील्ड में कही प्रकार के पंखे एवं उसी संलग्न आइटम और UNSV वायरिंग और स्ट्रीट लाईट नेट वर्क और उसी संलग्न आइटम, DG सेट AMF LT पेनल का विशिष्ट रिपेरिंग और उसी संलग्न काम	₹ 41.00	2017_MES_119211_1	8362/E8
11.	बड़ोदा एरफोर्स स्टेशन दरजिपुरा, हरणी , हरणी एरफील्ड में MD ACCN / OTM की पिरियोदिकल सर्विसिस एवं वेल कम मेंटेनेंस	₹ 47.50	2017_MES_119214_1	8364/E8
12.	बड़ोदा एरफोर्स स्टेशन में विविध स्टील फर्नीचर का डेंटिंग पेन्टिंग के साथ रिपेरिंग	₹ 23.00	2017_MES_119288_1	8359/E8
13.	बड़ोदा एरफोर्स स्टेशन में DSC और NC के लिए MD ACCN के लिए ARBORICULTURE वर्क में SMQ और OMQ में निश्चित रिपेरिंग काम	₹ 40.00	2017_MES_119389_1	8345/E8
14.	बड़ोदा एरफोर्स स्टेशन में विविध प्रकार के लकड़ी के फर्नीचर का रिपेरिंग	₹ 23.50	2017_MES_119539_1	8360/E8

Note : For further details, refer www.eprocuremes.gov.in

Garrison Engineer (I) (AF) Baroda

सूचना

कृपया आपके विज्ञापन व समाचार हमारे निम्न लिखित ई-मेल पर ही भेंजे :

alpaviram@gmail.com